नवभारत

| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

कांग्रेस को आत्म मंथन करना होगा

हरियाणा और जम्मू तथा कश्मीर विधानसभा के चुनाव परिणाम घोषित हो गए हैं. हरियाणा में भाजपा पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बनाने जा रही है. जबकि जम्मू कश्मीर में नेशनल कांफ्रेंस ने जीत दर्ज की है. इन चुनावों के परिणाम कांग्रेस को आत्म मंथन का अवसर प्रदान करते हैं. जम्मू और कश्मीर में हालांकि कांग्रेस ने नेशनल कांफ्रेंस के साथ बहुमत प्राप्त किया है लेकिन खुद कांग्रेस जहां चुनाव लड़ रही थी, वहां उसका स्ट्राइक रेट बहुत खराब है. जम्मू और कश्मीर में कांग्रेस को मुख्यत: जम्मू की सीटें मिली थीं, जो हिंदू बहुल इलाका है. जम्मू की 43 सीटों में से कांग्रेस को मात्र 7 सीटों पर संतोष करना पड़ा है. इस गठबंधन ने कश्मीर घाटी में अच्छी सफलता प्राप्त की है जहां से 47 सीटें आती हैं. कश्मीर घाटी की 47 में से 42 सीटों पर कांग्रेस और नेशनल कांफ्रेंस को सफलता मिली है जिसमें अकेले 41 सीटों पर नेशनल कांफ्रेंस विजई हुई है. यह चुनाव से पहले से तय था कि यदि नेशनल कांफ्रेंस और कांग्रेस की सरकार बनती है तो जम्मू तथा कश्मीर में उमर अब्दुल्ला और हरियाणा में नायब सिंह सैनी या भूपेंद्र हुड्डा में से कोई मुख्यमंत्री बनेगा. यदि हरियाणा में कांग्रेस को बहुमत मिलता तो भूपेंद्र सिंह हुड्डा को मुख्यमंत्री बनाया जाता लेकिन अनुमानों के विपरीत यहां भाजपा ने बेहतरीन प्रदर्शन किया है. भाजपा का प्रदर्शन इसलिए भी उल्लेखनीय है क्योंकि हरियाणा में पहली बार किसी पार्टी ने तीसरी बार सत्ता में वापसी की है. इसके पहले कांग्रेस लगातार दो बार सत्ता में रही थी.

हरियाणा में कांग्रेस को संगठन मजबूत करने की जरूरत है. वहां पिछले 11 वर्षों से कांग्रेस जिला इकाइयों का गठन नहीं कर पाई है. संगठन की खराब हालत की वजह से ही अनुकूल माहौल होने के बावजूद पार्टी अपने पक्ष के वातावरण को परिणामों में तब्दील नहीं कर सकी. कांग्रेस की एक दिक्कत यह भी है कि वो पूरी तरह से करिश्माई नेतृत्व और नारों पर निर्भर हो गई है. कांग्रेस को गांधी परिवार के करिश्माई नेतृत्व के बल पर चुनाव लड़ने की आदत हो गई है. इस वजह से उसके कार्यकर्ता मैदान में सक्रिय नहीं रहते. हरियाणा में कांग्रेस पिछले 10 वर्षों से सत्ता में नहीं है, लेकिन स्थिति यह है कि उसके 30 में से 19 मौजूदा विधायक चुनाव हार गए. यानी विपक्षी विधायक के रूप में भी उसके जन प्रतिनिधियों ने जनता के बीच काम नहीं किया. हरियाणा में कांग्रेस पूरी तरह से परजीवी आंदोलनों के बल पर सत्ता में वापसी का सपना बुन रही थी. उसे लग रहा था कि किसान आंदोलन, पहलवानों की नाराजगी और अग्नि वीर के कारण पूर्व सैनिक और सैनिक परिवारों के गुस्से का उसे बिना कुछ किए ही लाभ मिलेगा. लेकिन हकीकत में राजनीति इस तरह नहीं की जाती. यह पंडित जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी या राजीव गांधी का युग नहीं है. जब कांग्रेस अपने करिश्माई नेताओं के बल पर चुनाव जीत जाती थी. अब उसके सामने भाजपा और संघ परिवार के शक्तिशाली संगठन खड़े हैं, जिनके कार्यकर्ता वर्ष भर सक्रिय रहते हैं. कांग्रेस ने दूसरी गलती भूपेंद्र सिंह हुड्डा पर आवश्यकता से अधिक निर्भर होकर की. कांग्रेस यह भूल गई कि भूपेंद्र सिंह हुड्डा के नेतृत्व में पार्टी हरियाणा में लगातार विधानसभा और लोकसभा चुनाव हार रही है. ऐसे में उसने सामूहिक नेतृत्व पर जोर देना चाहिए था, लेकिन कांग्रेस ने सारी कमान भूपेंद्र सिंह हुड्डा के हाथों में दे दी. स्थिति यह थी कि कांग्रेस के 90 में से लगभग 77 टिकट भूपेंद्र सिंह हुड्डा को के समर्थकों को दिए गए. इससे कुमारी शैलजा और रणदीप सुरजेवाला के समर्थक नाराज हो गए. खास तौर पर कुमारी शैलजा की वजह से दलित वोटों का नुकसान कांग्रेस को उठाना पड़ा. हरियाणा में 20 फ़ीसदी दलित मतदाता हैं. हरियाणा के चुनाव परिणाम कांग्रेस के लिए गंभीर चेतावनी है.

इसी तरह कश्मीर के मतदाताओं ने केंद्र शासित प्रदेश के स्टेटस को मंजूर नहीं किया है. जिस राज्य में 75 वर्ष तक 370 जैसी विशेष धारा लगी थी. उस राज्यों को एक दिन में केंद्र शासित प्रदेश बना दिया गया. मतदाताओं ने इसे अपना अपमान समझा. इसलिए जम्मू और कश्मीर के चुनाव परिणामों से सबक लेकर केंद्र सरकार ने जल्दी से जल्दी जम्मू और कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा देना चाहिए. कुल मिलाकर चुनाव परिणाम बताते हैं कि जनता चुनावी नारों और शोर के बीच अपना फैसला करना जानती है. दोनों स्थानों पर शांतिपूर्ण मतदान हुआ. इसलिए कहा जा सकता है कि चुनाव परिणाम चाहे जो हो लेकिन जीत लोकतंत्र की हुई है.

हरियाणा में चला मोदी की लोकप्रियता का जादू

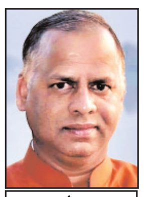
कृष्णमोहन झा

हरियाणा विधानसभा के चुनाव परिणामों ने कांग्रेस की सारी उम्मीदों पर फेर दिया है।उसके लिए हरियाणा के चुनाव परिणाम निराशाजनक साबित हुए हैं। कांग्रेस यह उम्मीद लगाए बैठी थी कि दस साल बाद उसे पुन: राज्य की सत्ता पर काबिज होने का सौभाग्य मिलने जा रहा है परंतु शायद वह जनता के रुख का अंदाजा लगाने में भूल कर बैठी और अब लगातार तीसरी बार उसे सदन के अंदर विपक्ष की भूमिका निभाने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। गौरतलब है कि भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व ने विधानसभा चुनावों की घोषणा के कुछ माह पूर्व नायब सिंह सैनी को मुख्यमंत्री पद की बागडोर सौंपी थी जबकि पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर को प्रधानमंत्री मोदी ने केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल कर लिया था। भाजपा हाईकमान ने जिस रणनीति के तहत हरियाणा में नेतृत्व परिवर्तन किया था उस रणनीति का भाजपा को पूरा फायदा मिला और वह लगातार तीसरी बार सत्ता पर काबिज होने में कामयाब हो गई। गौरतलब है कि भाजपा ने चुनावों के कुछ माह पूर्व इस तरह के

प्रयोग कुछ अन्य भाजपा शासित राज्यों में भी किए और सत्ता पर अपनी पकड़ बनाए रखने में कामयाबी भी मिली। निश्चित रूप से हरियाणा विधानसभा चुनाव में भाजपा की इस जीत ने केंद्रीय मंत्री एवं हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर खट्टर का कद भी बढ़ा दिया है जो लगभग 9 साल तक मुख्यमंत्री की की कुर्सी पर आसीन रहे। हरियाणा में भाजपा की शानदार जीत के बाद पार्टी कार्यकर्ताओं और नेताओं का उमंग और उल्लास चरम पर है जबकि कांग्रेस को यह समझ नहीं आ रहा है कि मतदान संपन्न होने के बाद घोषित हुए सारे चैनलों के एक्जिट पोल के नतीजे कैसे गलत साबित हो गये । दरअसल अब कांग्रेस को हरियाणा में मिली शोचनीय हार को स्वीकार करने का साहस दिखाना चाहिए और यह आत्म मंथन भी करना चाहिए कि आखिर क्यों जनता से उसकी दूरियां कम होने का नाम ही नहीं ले रही हैं।यह भी कम आश्चर्यजनक नहीं है कि चुनावों में अपनी आसन्न पराजय दीवार पर लिखी इबारत के समान स्पष्ट दिखाई देने के बावजूद कांग्रेस के सभी दिग्गज नेता सत्ता में वापसी का दावा कैसे कर रहे थे। मतदान संपन्न होने के बाद तो कांग्रेस को इतने अतिआत्मविश्वास ने जकड़ लिया था कि उसके अंदर नये मुख्यमंत्री के नाम पर भी विचार विमर्श प्रारंभ हो चुका था। मतगणना के दिन सुबह भी पार्टी के अंदर इसी तरह की चर्चाएं चल रही थीं लेकिन दो तीन घंटे की मतगणना के बाद सभी कांग्रेस नेताओं के चेहरों का रंग फीका पड़ने लगा। एक्जिट पोल के नतीजों पर आंख मूंद कर भरोसा करना उन्हें महंगा पड़ा। काश कांग्रेस के नेताओं ने एक बारगी यह भी सोच लिया होता कि एक्जिट पोल के नतीजे जिस तरह अतीत में भी कई बार गलत साबित होते रहे हैं उसी तरह इस बार भी गलत साबित हो गये तो पार्टी को कितनी किरकिरी का सामना करना पड़ेगा। हरियाणा विधानसभा के चुनाव परिणामों से ऐसा प्रतीत होता है कि वहां भाजपा के पक्ष में पहले से ही अंडर करंट बह रहा था जिसे भांपने में कांग्रेस के रणनीतिकारों से चूक हो गई। इसमें कोई संदेह नहीं कि हरियाणा विधानसभा के चुनाव परिणामों ने समूची कांग्रेस पार्टी को हक्का बक्का कर दिया है । उसकी समझ में ही आ रहा है कि मतगणना के रुझान कैसे उसके पक्ष में आते आते उसकी गहरी शिकस्त का संदेश लेकर आ गये। दरअसल कांग्रेस को अपनी इस शोचनीय हार के लिए किसी और पर दोषारोपण करने के बजाय यह स्वीकार करने का साहस दिखाना चाहिए कि हरियाणा में उसके वरिष्ठ नेताओं के मतभेदों और मुख्यमंत्री पद की महत्वाकांक्षा ने उसे लगातार तीसरी बार करारी हार की कगार पर पहुंचा दिया।

(लेखक राजनैतिक विश्लेषक है)

> कांग्रेस सांसद एवं मुख्यमंत्री पद की दावेदार कुमारी शैलजा की टिकट वितरण में जिस उपेक्षा की गई उससे नाराज़ हो कर उन्होंने दस दिन तक न केवल पार्टी के चुनाव अभियान से खुद को अलग रखा बल्कि वे घर के बाहर ही नहीं निकलीं । उनकी नाराजगी दूर करने के लिए खुद राहुल गांधी को आगे आना पड़ा। राहुल गांधी ने मंच पर पूर्व मुख्यमंत्री भूपिंदर सिंह हुड्डा से उनका हाथ मिलवाकर यह संदेश देने की कोशिश तो जरूर की कि पार्टी पूरी तरह एकजुट है परन्तु तब तक काफी देर हो चुकी थी। पार्टी के चुनाव अभियान से कुमारी शैलजा की इस दूरी ने पार्टी की चुनावी संभावनाओं को बहुत प्रभावित किया। टिकट वितरण में भूपिंदर सिंह हुड्डा ने जिस अपना वर्चस्व कायम रखा उसने भी अनेक नेताओं को रुष्ट कर दिया। कुमारी शैलजा की नाराज़गी ने दलित वोट बैंक को पार्टी से दूर करने में बड़ी भूमिका निभाई। कांग्रेस ने यह खुशफहमी भी पाल रखी थी हरियाणा में किसानों की नाराज़गी, अग्निवीर योजना का कथित विरोध , एंटी इन्कमबैंसी जैसे कारक उसका सत्ता से एक दशक पुराना वनवास समाप्त कराने में मददगार साबित होंगे परंतु शायद वह इस हकीकत को भूल गई कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की करिश्माई लोकप्रियता को चुनौती देने की स्थिति तक पहुंचना उसके लिए अभी नामुमकिन ही है।

डायरी

हरियाणा व जम्मू-कश्मीर परिणाम से भाजपा का हौसला बढ़ा

प्रवेश कुमार मिश्र

लोकसभा चुनाव में अपेक्षित सफलता नहीं मिलने के बाद अपेक्षाकृत कमजोर दिख रही भाजपा को हरियाणा व जम्मू-कश्मीर ने मजबूती प्रदान कर दिया है. हरियाणा में हारी बाजी पलट कर भाजपाई रणनीतिकारों ने साबित कर दिया है कि सत्ता विरोधी लहर को कुंद करने का सबसे बेहतर तरीका उत्तराखंड के तर्ज पर अंतिम समय में मुख्यमंत्री का बदलाव करना ही होता है. हरियाणा विधानसभा चुनाव में नकारात्मक माहौल में सकारात्मक परिणाम और जम्मू-कश्मीर में मुख्य विपक्षी दल के रूप में दमदार उपस्थिति से भाजपाई रणनीतिकार काफी उत्साहित हो गए हैं.भाजपाई नेता अब महाराष्ट्र व झारखंड को लेकर खासा उत्साहित दिख रहे हैं.

बिहार की राजनीति में जनसुराज पार्टी की उपस्थिति

बिहार की राजनीति में एक और नई पार्टी का उदय हुआ है. लगभग दो वर्ष पदयात्रा के बाद चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर ने जनसुराज यात्रा को जनसुराज पार्टी के रूप में स्थापित कर बिहार की राजनीति में हलचल पैदा कर दी है. राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व संविधान निर्माता बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर के फोटो को पार्टी ध्वज में स्थान देकर जहां एक तरफ पीके ने दल के सोच को ऐतिहासिक पुरूषों के विचारों से जोड़कर दूरगामी रणनीति का परिचय दिया है वहीं दूसरी ओर जातीय समीकरणों में बंटे वोटबैंक को साधने के लिए पार्टी का पहला अध्यक्ष दलित समुदाय से ताल्लुक रखने वाले पूर्व राजदूत मनोज भारती को बनाकर जाति व योग्यता के बीच समन्वय का संदेश देने का प्रयास किया है.

हालांकि दल के गठन के बाद विरोधी दलों के नेताओं ने इसे एक प्रयोग बताते हुए इसके भविष्य पर संदेह व्यक्त किया है. फिर भी आमलोगों के मन में पीके की सफल चुनावी रणनीति की चर्चा हो रही है.

महाराष्ट्र व झारखंड में गठजोड़ की तैयारी

हरियाणा विधानसभा चुनाव में इंडिया गठबंधन के बिखराव के कारण कांग्रेस व आम आदमी पार्टी को जिस तरह से राजनीतिक नुकसान हुआ है उससे सबक लेते हुए कांग्रेस पार्टी महाराष्ट्र, झारखंड व दिल्ली में होने वाले विधानसभा में सहयोगी दलों के साथ हठधर्मिता के बजाय समन्वय स्थापित करने की योजना बना कर चलने को तैयार हो रही है.

दिल्ली की राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि चुनाव के अंतिम समय में जिस तरह से कांग्रेस व आप के बीच गठबंधन टूट गया और उसके कारण साथ चलने वाले एक-दूसरे से ही उलझ गए उससे दोनों का नुक़सान हुआ है. इसलिए भविष्य को लेकर कांग्रेस काफी सावधानी से बढ़ रही है.

भाजपा अध्यक्ष के नाम को लेकर संघ व भाजपा में मंथन

दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में इन दिनों भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के नाम को लेकर जबरदस्त चर्चा हो रही है. भाजपा व संघ के बीच इस विषय पर एकराय नहीं बनने के कारण जेपी नड्डा के उत्तराधिकारी बनने वाले अध्यक्ष का नाम घोषित नहीं हो रहा है. चर्चा है कि इस विषय पर संघ प्रमुख मोहन भागवत व प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बीच पिछले दिनों लंबी मंत्रणा हुई है. पार्टी के वरिष्ठ व अनुभवी नेताओं के अलावा संघ की ओर से पार्टी के अंदर संगठन महामंत्री की भूमिका में रहे नेताओं के नाम पर भी व्यापक विमर्श हुआ है. कहा जा रहा है कि इस बार संघ अपने अनुभवी संगठन महासचिव में से किसी वरिष्ठ नेता को अध्यक्ष पद की कुर्सी पर बैठा सकता है. इसलिए संजय भाई जोशी समेत कई पूर्व संगठन महासचिवों का नाम चर्चा में है.

शराबबंदी हटाने के पक्ष में प्रशांत किशोर

बिहार में अगर मध्यावधि चुनाव होते हैं तो क्या शराबबंदी मुद्दा होगा? जनसुराज पार्टी बनानेवाले प्रशांत किशोर का कहना है कि पटना में सरकार बनाने के एक घंटे के भीतर उनकी पार्टी शराब पर से पाबंदी हटा देगी. किसी भी प्रमुख राजनीतिक दल ने नीतीश की शराबबंदी नीति का विरोध नहीं किया है, जबकि यह नीति बुरी तरह से फ्लॉप रही है, जैसे कि ऐसे प्रतिबंध अक्सर असफल रहते ही हैं. शराबबंदी से बिहार को अनचाहे परिणाम भुगतने पड़े हैं. सबसे पहली बात तो यह कि इससे राज्य में अवैध शराब का भयंकर धंधा फैल गया है, जोकि पुलिस-नेता की सांठगांठ से चलता है. यह तो होना ही था, क्योंकि नीतीश कुमार ने देसी से लेकर हर प्रकार की शराब पर प्रतिबंध लगाया, नीति को सरप्राइज के तौर पर घोषित किया और एकदम से उसे सख्ती से लागू किया. नतीजा यह हुआ कि राज्य का पहले से ही कमजोर खजाना अतिरिक्त खाली हो गया. पड़ोसी राज्यों में शराब की मांग बढ़ गई. बंगाल व झारखंड का एक्साइज राजस्व कई गुना बढ़ गया. दूसरा यह कि बिहार ने शराब पीने वाले अपने ही नागरिकों को रातभर में बना दिया. प्रतिबंध से शराब के सेवन में कमी नहीं आती है. जिस तरह पानी अपना रास्ता बना लेता है, वैसे ही जो पीना चाहते हैं वह शराब तलाश लेते हैं. तीसरा, जैसा कि इस प्रकार के प्रतिबंधों से होता है, गतिविधि भूमिगत चली जाती है, अवैध फैक्ट्री बन जाती हैं- नया माफिया गठित हो जाता है. नकली शराब से मरने वालों की संख्या बढ़ने लगती है. चार, देसी शराब के बनाने व बिक्री में हाशिये पर पड़े समुदाय ही ज्यादा लगे हुए थे, उनकी जीविका का साधन ही चला गया. जेलों में लोगों की संख्या बढ़ गई और अदालतों पर बोझ बढ़ गया. पहली बार के के लिए कानून लचीला किया गया, लेकिन कुल मिलाकर नीति फ्लॉप रही. चूंकि नीतीश कुमार चुनाव पर चुनाव जीत रहे थे, इसलिए शराबबंदी के शुरुआती आलोचक भी खामोश हो गए, विशेषकर महिलाओं के रूप में नये वोट बैंक के उभरने से सभी चुप हो गए. लालू प्रसाद यादव व जितेन मांझी ने शराबबंदी नीति को फ्लॉप अवश्य कहा, लेकिन 2016 के बाद, जब इस कानून का गठन हुआ था, किसी सियासी दल ने शराबबंदी को चुनावी मुद्दा नहीं बनाया. अगर प्रशांत किशोर के समर्थन में लोग आ जाते हैं, तो आश्चर्य नहीं होगा कि नीतीश कुमार स्वयं इस नीति पर यू-टर्न कर लें.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

आज का समय युद्ध का नहीं, कोई मोदी की सुनता क्यों नहीं

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, हमें समय के बारे में बताइए. समय जानने के लिए अब लोग घड़ी की बजाय मोबाइल का इस्तेमाल करते हैं. महंगी से महंगी रिस्टवाच भी अब एक प्रकार की ज्वेलरी या एसेसरी बन गई हैं. ऐसा शोपीस जो लोगों को दिखाने के लिए है. स्मार्टवाच तो समय के अलावा आपका ब्लडप्रेशर और न जाने क्या-क्या बताती है. आपको याद होगा कि जब बीआर चोपड़ा का महाभारत सीरियल टीवी पर दिखाया जाता था तो उसकी शुरूआत हरीश भिमानी के यह कहने से होती थी मैं समय हूं.

हमने कहा, भिमानी को भूल जाइए, प्रधानमंत्री मोदी को याद रखिए. समय को लेकर मोदी ने धीर-गंभीर स्वर में कहा कि यह समय युद्ध का नहीं है.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, हमें तो लगता है कि समय हमेशा युद्ध और संघर्षों का रहता है. रूस और यूक्रेन डेढ़ वर्ष से भी ज्यादा समय से लड़ रहे हैं. मध्य पूर्व में इजराइल की हमास, लेबनान, ईरान से लड़ाई चल रही है. विश्व में कहीं न कहीं युद्ध होते रहना अमेरिका की इकोनामी के लिए जरूरी है ताकि उसकी हथियार बनाने वाले उद्योगों को काम मिलता रहे. खुद अमेरिका भी समय-समय पर युद्ध में कूद जाता है. कोरिया युद्ध विएतनाम वार, अफगानिस्तान की लड़ाई, इराक में सद्दाम हुसैन का सफाया बताते हैं कि अमेरिका के लिए हर समय युद्ध का है.

हमने कहा, मोदी ने विवेक की बात कही है. युद्ध से बरबादी और विनाश होता है. विकास के लिए शांति आवश्यक है. इतने पर भी कोई समझने को तैयार नहीं है. यदि युद्ध न हो तो इतिहास फीका हो जाएगा. उसमें वीर राजाओं और योद्धाओं के नाम कैसे आएंगे? युद्ध को लेकर ही तो रामायण, महाभारत लिखे गए. भगवान कृष्ण ने भी पांडवों के दूत के रूप में दुर्योधन से कहा था कि युद्ध टालना हो तो 5 पांडवों को सिर्फ 5 गांव दे दो. दुर्योधन ने जवाब दिया केशव, बिना युद्ध के मैं सुई की नोक के बराबर भी जमीन नहीं दूंगा. सारे युद्ध जर (संपत्ति) जोरू (स्त्री) और जमीन के लिए हुए हैं और होते रहेंगे. युद्ध को भगवान भी नहीं रोक पाए. हिटलर का युद्धोन्माद अब पुतिन, जेलेंस्की, नेतन्याहू, हिजबुल्लाह के दिमाग पर सवार है. उनके लिए हर समय युद्ध और खूनखराबे का है.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11689

-डॉ. सागर खादीवाला

1		2	3	■	4	5	6
	■	7			■	8	
9	10			■	11	■	
■		■	■	12			
13						■	
14		■	■	15			■
	■	16			■	■	17
18			■	19			

बायें से दायें

1. 1. हिमालय पर्वत (सं.), 4. चिकित्सा, उपाय, युक्ति (उर्दू), 7. बोलना, वर्णन करना, 8. जो स्वभाव से अच्छा हो, अच्छा, 9. अप्रिय, असहय (उर्दू), 12. दंगा-फसाद, भीषण या विकट दुर्घटना, 13. सलाहकार, परामर्श या सलाह देने वाला, 14. आच्छादित करना, 15. बादलों का हटना, 16. हवादार कोठी, बंगाल का, बंगाल की भाषा, 18. बिहार राज्य के अंतर्गत एक प्राचीन स्थान जो बड़ा वश्विवद्यिालय था, 19. हाथी को चलाने वाला महावत (उर्दू)

ऊपर से नीचे

1. अस्थिर होना, जमी अवस्था से इधर-उधर होना, डोलना, 2. एक पक्षी, सुर्खाब, 3. हिलोर, तरंग, 5. पुनाफा, प्राप्ति, 6. देश निकाले का दंड पाया हुआ, नविर्वासित, 10. गहरा होना या करना, 11. स्वामी, पति, मालिक, 12. वचन देकर उसे न निभाना, 13. कुश्ती में विपक्षी को गिराना या चित करना, प्रतियोगिता को हराना, 16. सेवक, दास, जन (उर्दू), 17. नमक

Solution 11688

ब	ह	नो	ई	■	सं	ग	म
या	र	■	र्ष्या	■	ग	ज	क
■	■	क	लु	षि	त	■	बू
मृ	ग	या	■	■	रा	व	ल
त्यु	■	म	ति	■	श	शी	■
■	उ	त	र	ना	■	क	र्म
क	ड़ा	■	प	र	मा	र	■
थ	का	व	ट	■	चा	ण	क्य

ज्योतिषाचार्य पं. नारायणशंकर नाथूराम व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में योजनाओं का शुभारंभ होगा. सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी. वर्ष के मध्य में पारिवारिक सुख अच्छा रहेगा. व्यवसाय में सुधार होगा. वर्ष के अन्त में उतावलेपन में लिये गये निर्णय से हानि होगी. शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा. अत्याधिक परिश्रम से मन व्यथित रहेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शत्रु पक्ष प्रबल होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को अत्याधिक परिश्रम से मन में पीड़ा होगी, और थकान महसूस करेंगे. कर्क राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को व्यापार में सुधार होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को यथेष्ठ संयम से काम लेना हितकर रहेगा. अपनी वाक पटुता पर विशेष संयम रखना चाहिये.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक साहसी, निडर, महत्वाकांक्षी, परिश्रमी, कार्यकुशल, व्यक्तित्ववान होगा. बचपन में स्वास्थ्य कुछ नरम गरम रहेगा. अस्थिर बुद्धि का होगा. कभी उँटपटांग बात करने वाला होगा. विद्या प्रारंभ में कम तथा बाद में अच्छी रहेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

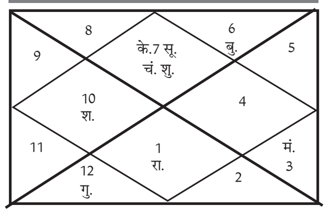

पंचांग

रा.मि. 17 संवत् 2081 आश्विन शुक्ल षष्ठी बुधवासरे दिन 7/36, मूल नक्षत्रे रात 1/44, शोभन योगे रात 3/40, तैतिल करणे सू.उ. 6/12 सू.अ. 5/48, चन्द्रचार धनु, शु.रा. 9, 11, 12, 3, 5, 7 अ.रा. 10, 1, 2, 4, 6, 8 शुभांक- 2, 4, 8.

व्यापार भविष्य

आश्विन शुक्ल षष्ठी को मूल नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, ऊॅनी वस्त्र, रूई, सूत, सन् के भाव में मंदी होगी. गुड़ खांड, शक्कर, के भाव मेंतेजी होगी. प्लास्टिक दाना, कागज, रबड़ में मंदी होगी, इसके बाद तेजी होगी. भाग्यांक- 1428 है.

मेष- लाभ कम, खर्च की अधिकता रहेगी. राजकीय कार्यो में सफ्लता प्राप्त होने का योग है. अपूर्ण समाचारों पर कोई भी निर्णय न लेना हितकर.

वृषभ- खानपान पर संयम रखें. कार्य की अधिकता रहेगी. सोचे हुये कार्य में अवरोध पैदा होगा. यात्रा में सावधानी रखकर कार्य करे. यश प्राप्त होगा.

मिथुन- भ्रमण मनोरंजन तथा आमोद प्रमोद के साधनों में वृद्धि होगी. दूर गये मित्र के संबंध में सुखद समाचार मिलेगा. मान प्रतिष्ठा बढेगी.

कर्क- आकस्मिक खर्च में वृद्धि होगी. दिनचर्या नियमित रहेगी. अनावश्यक विवादों को टालना हितकर रहेगा. मांगलिक कार्य बनने का योग है.

सिंह- आर्थिक संसाधन में वृद्धि होगी. पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी. मानसिक संतुलन बना रहेगा. हर्षोल्लास प्राप्त होने का योग है.

कन्या- राजकीय समस्या का सरलता से समाधान होगा. निजी पुरूषार्थ बना रहेगा. मांगलिक कार्यो पर व्ययभार होगा. दूर की यात्रा होगी.

तुला- धार्मिक कार्यो में मानसिक सुख संतोष रहेगा. किये गये प्रयासों में लाभ सफ्लता मिलेगी. अतिथि आगमन का योग है. लाभ होगा.

वृश्चिक- किसी विशेष व्यक्ति की मदद प्राप्त होगी. किसी कार्य से लाभ प्राप्त होगा. नवीन कार्य की योजना बनेगी. थकान महसूस करेंगे.

धनु- क्रोध पर नियंत्रण रखकर कार्य करना हितकर रहेगा. दूर गये मित्र के संबंध में सुखद एवं लाभदायक समाचार प्राप्त होगा. संदेश मिलेगा.

मकर- कोर्ट कचहरी के कार्य बनेंगे. अधिकारियों से सीमित वार्तालाप करें. व्यय पर नियंत्रण रखकर कार्य करें. प्रयास करने पर सफ्लता मिलेगी.

कुम्भ- पड़ोसियों से संबंधों में सुधार होगा. रक्त संबंधियों से सहयोग मिलेगा. यात्रा में उद्देश्य पूर्ति होगी. सुख सहयोग और लाभ प्राप्त होगा.

मीन- आर्थिक प्रयासों में सफ्लता मिलेगी. पारिवारिक तनाव दूर होगा. दायित्वों की पूर्ति होगीं. जमिथुनजायजाद के कार्य सफ्ल होंगे.

SUDOKU 6821

9		6		3		4		8
	2				9		7	
4			1	6				2
		8			2		3	
1		4				2		5
	3		5			8		
7				9	5			3
	8		6				4	
6		2		7		5		1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सु-दोकू 6820

3	6	5	1	8	2	7	4	9
7	9	2	3	5	4	1	8	6
4	1	8	6	7	9	5	3	2
6	5	9	2	4	8	3	7	1
8	4	7	9	3	1	6	2	5
1	2	3	5	6	7	4	9	8
2	7	6	4	9	5	8	1	3
5	8	1	7	2	3	9	6	4
9	3	4	8	1	6	2	5	7